

विचार बिन्दु

महापुरुष वे ही होते हैं जो विभिन्न परिस्थितियों के रंगों में रंगे जाने के बाद भी अपने व्यक्तित्व की पहचान को खोने नहीं देते। —मुक्ता

कृत्रिम मेधा से डर नहीं, समृद्धि और भविष्य देखता है राजस्थान

आज की तेज गति वाली दुनिया में कृत्रिम मेधा (एआई) एक क्रांतिकारी शक्ति के रूप में उभर रही है। जहां विश्व के कई हिस्सों में लोग इसे रोजगार छिनेंे वाले खतरे के रूप में देखते हैं, वहीं राजस्थान इस तकनीक को समृद्धि का माध्यम मानकर आगे बढ़ रहा है। राजस्थान सरकार और उद्योग जगत की दूरदर्शिता ने एआई को न केवल अपनाया है, बल्कि इसे राज्य की सांस्कृतिक विरासत, कृषि, पर्यटन, शिक्षा और उद्योगों से जोड़कर एक उज्ज्वल भविष्य की नींव रखी है। यहां डर की कोई जगह नहीं, बल्कि अवसरों की बहार है। राजस्थान का यह दृष्टिकोण न केवल राज्यवासियों के लिए प्रेरणा है, बल्कि पूरे भारत के लिए एक मॉडल प्रस्तुत करता है।

राजस्थान की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि, पर्यटन और खनन पर आधारित है। इन क्षेत्रों में एआई का उपयोग समृद्धि के द्वार खोल रहा है। उदाहरणस्वरूप, कृषि क्षेत्र में जहां किसान वर्षा और फसल की अनिश्चितता से जूझते हैं, वहां एआई आधारित ऐप्स जैसे राज किसान और ड्रोन तकनीक ने क्रांति ला दी है। ये ऐप्स मौसम पूर्वानुमान, मिट्टी परीक्षण और फसल स्वास्थ्य विश्लेषण प्रदान करते हैं। राजस्थान के किसान बताते हैं कि पहले ये फसल नष्ट होने का दर्श झेलते थे, लेकिन अब एआई से मिलने वाली सलाह से उनकी उपज 30 प्रतिशत बढ़ गई है। इसी प्रकार, बाडमेर और जैसलमेर के रेगिस्तानी इलाकों में सौर ऊर्जा संयंत्रों के रखरखाव में एआई का उपयोग हो रहा है, जो ऊर्जा उत्पादन को दोगुना करने में सहायक है। यह दिखाता है कि एआई राजस्थान की प्राकृतिक चुनौतियों को अवसरों में बदल रहा है।

पर्यटन राजस्थान की जीवन्तरेखा है। जयपुर का हवा महल, उदयपुर की झीलों, जोधपुर का मेहरानगढ़ किला और जैसलमेर की सुनहरी रेत ये सभी पर्यटकों को लुभाते हैं। लेकिन पर्यटन को स्मार्ट बनाने में एआई अग्रणी भूमिका निभा रहा है। राज्य सरकार ने राजस्थान टूरिज्म पोर्टल पर एआई चैटबॉट्स विकसित किए हैं, जो पर्यटकों को व्यक्तिगत यात्रा योजनाएं सुझाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई पर्यटक राजस्थानी लोक संगीत प्रेमी है, तो एआई उसे गांव के लोक कलाकारों के कार्यक्रमों से जोड़ देगा। वर्चुअल रियलिटी (वीआर) के माध्यम से पर्यटक घर बैठे अमेर किले की सवारी कर सकते हैं। इससे न केवल पर्यटन आय बढ़ रही है, बल्कि सोजलाल उजार-चढ़ाव भी कम हो रहा है। 2025 में राजस्थान में 10 करोड़ पर्यटकों का लक्ष्य एआई की बदौलत ही हासिल किया जा सकता है। यह तकनीक राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर को वैश्विक पटल पर नई ऊंचाइयों तक ले जा रही है।

शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान एआई को माध्यम बनाकर युवाओं को सशक्त कर रहा है। राज्य के ग्रामीण इलाकों में जहां शिक्षकों की कमी है, वहां एआई आधारित प्लेटफॉर्म जैसे दीक्षा और स्वयं प्रभा ने डिजिटल क्लासरूम स्थापित किए हैं। राजस्थान के एक गांवों में लड़कियां अब एआई ट्यूटर्स से गणित और विज्ञान सीख रही हैं, जो हिंदी और राजस्थानी में व्याख्या करते हैं। ई-शिक्षा योजना के तहत 5000 से अधिक स्कूलों में एआई लैब्स स्थापित हो चुके हैं। इससे ड्रापआउट दर 20 प्रतिशत घटी है। युवा उद्यमियों के लिए बीकानेर और कोटा में एआई इनक्यूबेटर्स चल रहे हैं, जहां स्टार्टअप्स को फंडिंग और मेंटरिंग मिल रही है। राजस्थान विश्वविद्यालय ने एआई पर पीएचडी प्रोग्राम शुरू किया है, जो राज्य को तकनीकी विशेषज्ञों का हब बना रहा है। यह भविष्य की पीढ़ी को नौकरियों के लिए तैयार कर रहा है, न कि बेरोजगारी के डर से भर रहा है।

एआई से डरने की बजाय राजस्थान इसे अपनाकर समृद्धि की ओर अग्रसर है। यह राज्य की सांस्कृतिक गौरवशाली परंपरा को आधुनिक तकनीक से जोड़ रहा है। कल्पना कीजिए, एक ऐसा राजस्थान जहां रेगिस्तान में स्मार्ट फार्मिंग हो, किले डिजिटल गाइड्स से जीवंत हों, और युवा वैश्विक इनोवेटर्स बनें। यह सपना साकार हो रहा है। राजस्थानवासी गर्व से कह सकते हैं-एआई से डर नहीं, समृद्धि और भविष्य हम देखते हैं।

उद्योग जगत में राजस्थान का सीमेंट और टेक्सटाइल सेक्टर एआई से मजबूत हो रहा है। अल्ट्राटेक और श्री सीमेंट जैसे प्लांट्स में पूर्वानुमानित रखरखाव के लिए एआई सिस्टम लगे हैं, जो मशीनों की खराबी पहले ही बता देते हैं। इससे उत्पादन लागत 15 प्रतिशत कम हुई है। नीमराणा का जापानी औद्योगिक क्षेत्र एआई रोबोटिक्स पर आधारित है, जो निवेशकों को आकर्षित कर रहा है। म्यूचुअल फंड कंपनियों जैसे एचडीएफसी और आईसीआईसीआई के राजस्थान कार्यालयों में एआई चैटबॉट्स ग्राहकों को निवेश सलाह दे रहे हैं। इससे वित्तीय समावेशन बढ़ा है, खासकर ग्रामीण महिलाओं के लिए। राजस्थान स्टार्टअप पॉलिसी 2022 ने एआई आधारित 500 स्टार्टअप्स को प्रोत्साहन दिया, जिनमें से कई कृषि ड्रोन और स्वास्थ्य ऐप्स पर काम कर रहे हैं। यह राज्य को मेक इन इंडिया का केंद्र बना रहा है।

स्वास्थ्य सेवाओं में भी एआई चमककर कर रहा है। कोविड महामारी के दौरान जयपुर के एसएमएस अस्पताल में एआई ने सीटी स्कैन विश्लेषण कर मरीजों की पहचान तेज की। अब आरोग्य राजस्थान ऐप एआई से बीमारियों का पूर्वानुमान लगाता है। गांवों में मोबाइल वैन एआई डिआइसेज से ब्लड प्रेशर और डायबिटीज चेक करती है। इससे ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाएं सुलभ हुई हैं। महिलाओं के लिए एआई आधारित मातृत्व ट्रेकिंग सिस्टम ने शिशु मृत्यु दर घटा दी है। भविष्य में एआई टेलीमेडिसिन राजस्थान को स्वास्थ्य हब बना देगा।

राजस्थान सरकार की नीतियां एआई को बढ़ावा देने वाली हैं। राजस्थान एआई मिशन के तहत 1000 करोड़ का फंड आवंटित हुआ है। आईआईटी जोधपुर और आईआईएम उदयपुर जैसे संस्थान एआई रिसर्च कर रहे हैं। डेटा सेंटरों का निर्माण अलवर और पिवाड़ी में हो रहा है, जो क्लाउड कंप्यूटिंग को मजबूत करेगा। हालांकि चुनौतियां हैं जैसे डिजिटल डिवाइड और साइबर सिक्योरिटी, लेकिन राज्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों से इन्हें दूर कर रहा है। 10 लाख युवाओं को एआई स्किलिंग का लक्ष्य रखा गया है।

एआई से डरने की बजाय राजस्थान इसे अपनाकर समृद्धि की ओर अग्रसर है। यह राज्य की सांस्कृतिक गौरवशाली परंपरा को आधुनिक तकनीक से जोड़ रहा है। कल्पना कीजिए, एक ऐसा राजस्थान जहां रेगिस्तान में स्मार्ट फार्मिंग हो, किले डिजिटल गाइड्स से जीवंत हों, और युवा वैश्विक इनोवेटर्स बनें। यह सपना साकार हो रहा है। राजस्थानवासी गर्व से कह सकते हैं-एआई से डर नहीं, समृद्धि और भविष्य हम देखते हैं। आइए, हम सभी इस यात्रा का हिस्सा बनें।

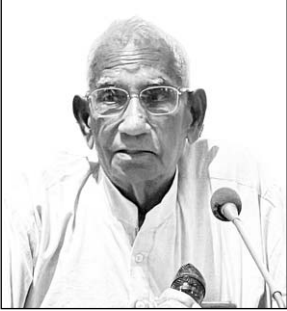
—अतिथि संपादक, अविनाश जोशी, वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

		
		
राशिफल गुरुवार 26 फरवरी, 2026		
		
फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, गुरुवार, विक्रम संवत २०८२, मृगशिरा नक्षत्र दिन १२:११ तक, प्रीति योग रात्रि १०:३३ तक, तैत्तिल करण दिन १:३७ तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा। गृह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-कुम्भ, बुध-कुम्भ, गुरु-मिथुन, शुक्र-कुम्भ, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह आज रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। आज बुध वक्री दिन १२:१७ पर होगा। आज नन्दगाँव होली, फागु दशमी है। श्रेष्ठ चीजें/सूर्योदय से ८:२४ तक, चर ११:१५ से १२:४० तक, लाभ-अमृत १२:४० से ३:३१ तक, शुभ ४:५६ से सूर्यास्त तक। राहूकाल: १:३० से ३:०० तक। सूर्योदय ६:५८, सूर्यास्त ६:२२		

मेघ	सिंह	धनु
 परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होगा। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से अटक हुए कार्य बनने लगेंगे।	 आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।	 परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।
वृष	कन्या	मकर
 आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित ख़ोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।	 व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।	 व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।
मिथुन	तुला	कुंभ
 व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नौकरिपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।	 व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।	 परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।
कर्क	वृश्चिक	मीन
 घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदेई रहेगी। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।	 चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं रहेगी। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। घर-परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।	 घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

संपादकीय

राजस्थान : अकादमिक हाराकीरी का प्रयास



डॉ. हेतु भारद्वाज

इन दिनों एक दुर्भाग्यपूर्ण समाचार चर्चा में है कि प्रदेश की अग्रणी शिक्षण संस्थाओं महाराजा कॉलेज तथा महारानी कॉलेज, जयपुर का स्वामित्व जयपुर विकास प्राधिकरण और नगर निगम को सौंप दिया जाए क्योंकि जिस जमीन पर ये दोनों संस्थाएँ स्थित हैं वह जमीन जेडीए और नगर निगम की है। यदि यह हास्यास्पद निर्णय लिया जाता है तो उन सभी सुधी जनों को गहरी पीडा होगी जिन्होंने राजस्थान

विश्वविद्यालय, जयपुर के गौरवपूर्ण इतिहास का आस्वाद लिया है। कभी पूरे राजस्थान के कॉलेज इसी विश्वविद्याय से सम्बद्ध थे तथा महाराजा कॉलेज तथा महारानी कॉलेज उत्तर भारत की अग्रणी संस्थाओं में गिने जाते थे। अकादमिक दृष्टि से इन दोनों संस्थाओं का स्थान बहुत ऊँचा माना जाता था। दोनों संस्थाओं में स्नातकोत्तर कक्षाओं का शिक्षण होता था तथा शोध कार्य करने की उत्तम व्यवस्था थी। इन दोनों संस्थाओं के प्राचार्य तथा शिक्षक अपने-अपने क्षेत्र के निष्णात पंडित माने जाते थे। इन्हीं संस्थाओं से राजस्थान कॉलेज शिक्षा के निदेशक तथा विश्वविद्यालय के कुलपति निकलते थे। वर्तमान में राजस्थान विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ. अल्पना कटेजा महारानी कॉलेज में शिक्षक रही है। इन संस्थाओं का प्रबंधन राजस्थान सरकार के हाथों में था।

महाराजा कॉलेज, महारानी कॉलेज, राजस्थान कॉलेज तथा कामर्स कॉलेज १९६१ तक सरकारी कॉलेज

थे। यह तथ्य आज की पीढ़ी को ज्ञात नहीं होगा कि कभी राजस्थान कॉलेज, जयपुर का रूतबा अलग ही था। इस कॉलेज को स्थापना सरकार ने विशेष प्रकार की शिक्षा देने के लिए की थी। इस कॉलेज में अध्यापकों की नियुक्ति राजस्थान लोकसेवा आयोग द्वारा अलग से की जाती थी तथा इस कॉलेज के अध्यापकों का वेतनमान भी कुछ ऊँचा और अलग होता था।

जुलाई, १९६१ में राजस्थान विश्वविद्यालय ने निर्णय लिया कि स्नातकोत्तर कक्षाओं तथा शोध के विभाग अलग से विश्वविद्यालय परिसर में खुलें और शेष महाविद्यालय परिसर में इसी गरिमा का नतीजा है कि सारी जर्जरता के बावजूद राजस्थान विश्वविद्यालय की छवि आज भी गौरवमय बनी हुई है।

यदि केवल इस आधार पर कि जमीन का स्वामित्व जेडीए तथा नगर निगम का है। महाराजा कॉलेज तथा

इन कॉलेजों में होता था, और वे स्नातकोत्तर कक्षाएँ लेते थे और शोध भी कराते थे।

इस प्रकार यह व्यवस्था ऐसी थी जिससे महाविद्यालयों की अकादमिक गरिमा कम नहीं हुई। कुल मिलाकर कॉलेज तथा स्नातकोत्तर विभाग विश्वविद्यालय को पूर्ण इकाई बनाते थे। अकादमिक दृष्टि से यह व्यवस्था विश्वविद्यालय का उच्च स्तर बनाने में सफल रही। कभी यह आलम था कि राजस्थान विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों में देश के जाने-माने विद्वान शोभित थे। यहाँ से अनेक अध्यापक जे.एन.यू. में गये, दूसरे विश्वविद्यालयों के कुलपति बने तथा राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थानों के मुखिया बने। इसी गरिमा का नतीजा है कि सारी जर्जरता के बावजूद राजस्थान विश्वविद्यालय की छवि आज भी गौरवमय बनी हुई है।

यदि केवल इस आधार पर कि जमीन का स्वामित्व जेडीए तथा नगर निगम का है। महाराजा कॉलेज तथा

महारानी कॉलेज का स्वामित्व जेडीए और नगर निगम को दे दिया जाता है तो यह विश्वविद्यालय का अंग भंग कर इन संस्थाओं को लिपिकों के हाथ में देना होगा, जिनका अकादमिक गुणवत्ता से कोई लेना देना नहीं है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आज भी प्रदेश की युवतियों की उच्च शिक्षा के लिए पहली पसंद महारानी कॉलेज है तथा विज्ञान के युवक महाराजा कॉलेज में प्रवेश पाकर कृतकृत्य होते हैं। इसलिए कम से कम एक सदी से चल रहे इन संस्थानों की मिष्क्तियत बदलना इन संस्थानों को नष्ट करने का उपक्रम होगा। यह प्रकारान्तर से राजस्थान विश्वविद्यालय को पंगु बनाना होगा और उसकी अकादमिक गरिमा को नष्ट करना होगा। बेहतर है, इस विश्वविद्यालय को बिखरने से पूर्व बंद कर दिया जाए। भले यह अकादमिक हाराकीरी का एक विचित्र उदाहरण होगा।

—डॉ. हेतु भारद्वाज, प्रख्यात साहित्यकार

ऑरोविल – उषानगरी

अनुसार, ईसान विकास की प्रक्रिया में बदलाव के दौर से गुजर रहे हैं। मनुष्य अंतिम रचना नहीं है, मनुष्य के बाद अतिमानसिक शक्ति का आविर्भाव होगा। श्रीअरविंद कहते हैं कि समानता, आजादी और भाईचारे की त्रिमूर्ति सिर्फ भाईचारे की बुनियाद पर ही मुमकिन है। यह सिर्फ ट्रांसफॉर्मेशन के प्रोसेस से ही हासिल किया जा सकता है। अरविंद सुपरमाइल को नीचे लाने के लिए तीन तरह के ट्रांसफॉर्मेशन बताते हैं, यानी साइकिक

ट्रांसफॉर्मेशन, स्पिरिचुअल ट्रांसफॉर्मेशन और सुपरमेंटल ट्रांसफॉर्मेशन। अरविंद सुपरमैन के बारे में बात करते हैं। यही शब्द वेस्टर्न फ़िलॉसफ़र फ्रेडरिक नीत्शे ने भी इस्तेमाल किया है। लेकिन श्रीअरविंद और फ्रेडरिक नीत्शे द्वारा इस्तेमाल किए गए मतलब में एक बुनियादी फ़र्क है। वेस्टर्न फ़िलॉसफ़र का सुपरमैन, आज के ईसान केमाहिमामंडन का प्रतीक है जो कि अप्सुर से कम नहीं है। दूसरी ओर, श्रीअरविंद सुपरमैन शब्द का इस्तेमाल उच्च और बदली हुई चेतना के लिए करते हैं जिसमे नया इबोलेयुशनरी मानव होगा। श्रीअरविन्द सुपरमैन के सन्दर्भ में लिखते हैं कि अगर तुम (सुपरमैन) सारी ईसानियत के गुलाम नहीं हो सकते, तुम उनके मालिक बनने के लायक नहीं हो और अगर तुम वशिष्ठ की गाय की तरह अपने स्वभाव

को नहीं बना सकते जो सारी ईसानियत की इच्छा पूरी करे, तो तुम्हारे शेर जैसे सुपरमैन होने का क्या फायदा? ऑरोविल कई एक्टिविटीज में शामिल हैं, लेकिन ऑरोविल की एक खास एक्टिविटी यूथ इंटरनेशनल एक्सचेंज प्रोग्राम है, जहाँ दुनिया भर से स्टूडेंट्स आते हैं और श्रीअरविन्द और श्रीमों के विज्ञान के हिसाब से ईसानियत के भविष्य के बारे में जानने के लिए बातचीत करते हैं। यह कोई बढ़ा-चढ़ाकर कहना नहीं होगा कि श्री अरविन्द की लाइफ डिवाइन मैमन ओपस ईसान के आध्यात्मिक भविष्य के विज्ञान को समझाती है जो वैदिक फ़िलॉसफी पर आधारित है।

श्रीमों के ये शब्द ऑरोविल के मकसद और उद्देश्य को बेहतर ढंग से समझने में मदद करते हैं – हम किसी पंथ, किसी धर्म के खिलाफ नहीं लड़ते हैं। हम किसी भी तरह की सरकार के खिलाफ नहीं लड़ते हैं। हम किसी भी सामाजिक वर्ग के खिलाफ नहीं लड़ते हैं। हम किसी भी देश या सभ्यता के खिलाफ नहीं लड़ते हैं। हम बंटवारे, बेहोशी, अज्ञानता, जड़ता और झूठ से लड़ रहे हैं। हम धरती पर एकता, ज्ञान, चेतना, सत्य स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं, और हम उन सभी से लड़ते हैं जो प्रकाश, शांति, सत्य और प्रेम को इस नई रचना के आने का विरोध करते हैं।

ऑरोविल अपनी एक खास बात

नीमकाथाना : अरावली संरक्षण यात्रा में चिड़ीमार पहाड़ बचाने की आवाज उठी

- गुजरात से दिल्ली जा रही अरावली संरक्षण यात्रा सीकर जिले के हरियाणा सीमा से सटे अंतिम गांव स्यालोदड़ा ग्राम पंचायत पहुंची**
- यात्रा दल ने अवैध खनन, अवैध क़ेशरों तथा कृषि व श्वसन, खाद्यज में फैल रहे भारी धूल प्रदूषण और धूलजनित बीमारियों की वास्तविक स्थिति जानी**
- अरावली संरक्षण यात्रा टीम ने क्षेत्र में लगातार बढ़ रही धूलजनित बीमारियों पर गहरी चिंता जताई और स्थिति पर अफ़सोस भी व्यक्त किया**

की सीमा पर स्थित है, एक ओर यह क्षेत्र राजस्थान के वन क्षेत्र (फॉरेस्ट पार्ट) में आता है, जबकि दूसरी ओर हरियाणा में इसे ग्राम पंचायत के राजस्व रिकॉर्ड में दर्शाया गया है। इसी कानूनी विसंगतियों पर गहरी चिंता जताई और स्थिति पर अफ़सोस भी व्यक्त किया। लोगों ने बताया कि चिड़ीमार पहाड़ राजस्थान-हरियाणा

चिड़ीमार पहाड़ की वास्तविक ऊंचाई लगभग ५०० से ६०० मीटर होने तथा एनसीआर क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद, कम ऊंचाई दर्शाकर पर्यावरणीय नियमों की अनेदेखी करते हुए खनन प्रेम जारी है, जिससे एनसीआर के फेफड़े कहे जाने वाले अरावली पर्वतमाला को हरियाणा सरकार गंभीर नुकसान पहुंच रहा है।

झालावाड़ : पिचकारी वाली सॉफ्ट ड्रिंक गिरने से बच्चे की एक आंख की रोशनी गई

दस दिन पहले नौ साल के बच्चे की आंख में सॉफ्ट ड्रिंक गिरने से कॉर्नियल अल्सर हो गया था, जिसे परिजनों ने कई अस्पतालों में दिखाया था

- बच्चे को परिजन कोटा के मेडिकल कॉलेज के एमबीएस अस्पताल लेकर पहुंचे, उपचार जारी**
- चिकित्सकों के अनुसार आंख में सुधार होता है तो ठीक है, अन्यथा कॉर्निया ट्रांसप्लांट (केराटोप्लास्टी) करना होगा**
- ‘संभवतया : इस प्रोडक्ट में केमिकल होगा, इससे बच्चे की आंख को नुकसान पहुंचा’**

पिचकारी वाली सॉफ्ट ड्रिंक थी ली। मनीष इससे खेल रहा था कि अचानक पिचकारी चलाते समय आंख में सॉफ्ट ड्रिंक चली गई। उसे काफी जलन हुई। उसने आंख मसली तो दिखाना बंद हो

गया। परिजनों ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सारोला कलां, फिर झालावाड़ अस्पताल में दिखाया, लेकिन सुधार नहीं होने पर कोटा लाए। सीनियर प्रोफेसर डॉ. जयश्री सिंह ने बताया कि

बच्चे को अभी आई डॉप्स प्रेसक्राइब की है। कुछ दवा भी दी है। आंख में कॉर्नियल अल्सर हो गया है। इससे धीरे-धीरे कॉर्नियल वैस्कुलराइजेशन हो गया। यह कॉर्निया को ऑक्सीजन नहीं मिलने पर होता है। इसके बाद ब्लाड वेसल्स ने काम करना बंद कर दिया। कॉर्निया को पारदर्शिता खराब होने लगती है। यह मनीष के साथ भी हुआ। आंख में सुधार होता है तो ठीक है अन्यथा कॉर्निया ट्रांसप्लांट (केराटोप्लास्टी) करना होगा। संभवतया: इस प्रोडक्ट में केमिकल होगा। इससे बच्चे की आंख को नुकसान पहुंचा। उन्होंने ऐसे प्रोडक्ट पर बैन लगाने और स्कूलों के बाहर विक्री नहीं होने की बात भी कही है।

डॉ. जयश्री सिंह का कहना है कि मनीष की आंख में यह सॉफ्ट ड्रिंक करीब १० दिन पहले गई थी। परिजन आयुर्वेदिक दवा आंख में डाल रहे थे। इससे आंख सही नहीं हुई। यह दवा नहीं डालनी चाहिए थी। इसके दुष्परिणाम हो सकते हैं क्योंकि एक तरफ केमिकल चला गया और दूसरी तरफ आपकी दवा डाल रहे हैं। परिजनों को उम्मीद थी कि आंख सही हो जाएगी लेकिन ऐसा नहीं हुआ। बच्चे को एक आंख से दिखना बंद हो गया। उसकी पढ़ाई डिस्टर्ब हो गई। इसके बाद परिजन नहाल को कोटा लाए। उन्होंने ओपीडी में दिखाया। इसके बाद आंख की जांच की गई है।